ओम् शान्ति। मीठे–2 बच्चे जानते हैं कि यह गीत कोई यहाँ का बनाया हुआ नहीं है। गीत जब सुनते हो तो समझते हो बरोबर बाबा हमारा हाथ पकड़ ले चलते हैं। जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना, समझते हैं हाथ ना पकड़ने से गिर ना पड़े, वैसे तुम जानते हो अब घोर अंधियारा है, ठोकरें ही ठोकरें खाते रहते हैं। बुद्धि भी कहती है एक बाबा ही है जो स्वर्ग, सचखण्ड की स्थापना करने वाला है। ऊँच ते ऊँच वह सच्चा बाबा है। उनकी महिमा करनी होती है औरों को निश्चय बिठाने लिए। बाबा है ही स्वर्ग स्थापना करने वाला अथवा हेविनली गॉड फादर। वो ही तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। हेविनली गॉड फादर यानी हेविन स्थापन करने वाला बरोबर हेविन की स्थापना करते हैं। फिर है हेविन का मालिक श्री कृष्ण, वो हो गया हेविन रचने वाला। रचता तो एक बाबा ही है। उनको याद करना है। उनसे वर्सा पाना है अर्थात् हेविनली प्रिंस बनना है। प्रिंस सिर्फ एक तो नहीं होगा। 8 डिनायस्टी गिनी जाती है। यह तो बुद्धि में है, बाबा से वर्सा ले रहे हैं। बाबा हेविन का रचयिता है। हम उस बाबा से कल्प–2 वर्सा लेते हैं। 84 जन्म पूरे करते हैं। आधा कल्प सुख, आधा कल्प दुख। आधा कल्प राम राज्य, आधा कल्प रावण राज्य। अब फिर से हम श्रीमत पर चल स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं। यह भूलने की बात तो नहीं। अन्दर में बड़ी खुशी होनी चाहिए। आत्मा को अन्दर खुशी होती है। आत्मा का खुशी का, दुख का, शकल पर आता है। देवताओं की शकल कितनी हर्षितमुख है। जानते हैं वह स्वर्ग के मालिक थे। समझाने लिए बाबा बोर्ड आदि भी बना रहे हैं। हेविनली गॉड फादर की महिमा अलग है और हेविनली प्रिंस की महिमा अलग है। वो है रचता, वो है रचना। रचता एक ही बाप है। तुम बच्चों को समझाने लिए बाबा युक्ति से लिखते रहते हैं तो मनुष्यों को अच्छी रीति समझ में आए। जिसको प०पि०प०, पतित–पावन कहते हैं वो बेहद का रचता है। रचेंगे भी ज़रूर स्वर्ग। सतयुग–त्रेता को मनुष्य स्वर्ग समझते हैं। स्वर्ग और नर्क आधा–2 हो जाते हैं। सृष्टि भी बरोबर आधा–2 है– नई और पुरानी। उन जिस्मानी झाड़ की एज कोई फिक्सप नहीं होती है। इनकी आयु बिल्कुल फिक्स है। इस मनुष्य सृष्टि रूपी वैराइटी झाड़ की आयु पूरी एक्युरेट है। ऐसी और कोई की होती नहीं। एक सेकेण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। वैराइटी झाड़ है। एक्युरेट बना–बनाया ड्रामा है। यह खेल 4 भागों में बाँटा हुआ है। जगन्नाथपुरी में हंडा चढ़ाते हैं चावल का। उसमें पूरे 4 भाग हो जाते हैं। यह सृष्टि भी 4 भाग में बाँटी हुई है। इसमें एक सेकण्ड भी कम–जास्ती नहीं हो सकता। तुम जानते हो, बाप ने 5000 वर्ष पहले भी समझाया था, हूबहू ऐसे ही समझा रहे हैं। निश्चय है 5000 वर्ष बाद फिर से हेविनली गॉड फादर, स्वर्ग की स्थापना करने वाला हमको स्वर्ग की बादशाही प्राप्ति कराने लिए लायक बना रहे हैं। बाबा लायक बना रहे हैं, रावण नालायक बनाते हैं। ऐसा नालायक बनाते हैं जो भारत कौड़ी जैसा बन पड़ते हैं। बाबा ऐसा लायक बनाते हैं जो भारत हीरे जैसा बन जाता है। नम्बरवार तो मर्तबे होते ही हैं। हरेक का अपना–2 कर्मबंधन भी है। कोई पूछते हैं– बाबा, हम वारिस बनेंगे वा प्रजा? बाबा कहते हैं, अपना कर्म बंधन देखो। कर्मबंधन का हिसाब–किताब है। कर्म,अकर्म,विकर्म की गति तो बाप ही समझाते हैं। बाबा हमेशा कहते हैं, अलग–2 आए राय पूछो अपने लिए। बाबा बतावेंगे तुम्हारा हिसाब–किताब किस प्रकार का है, तुम क्या पद पा सकते हो। सारी राजधानी स्थापन हो रही है। एक बाप ही किंगडम स्थापन करते हैं। बाकी सब अपना–2 धर्म स्थापन करते हैं। सतयुग में ल०ना० का राज्य था ना। वह है उन्हों की प्रालब्ध, सो भी नम्बरवार। उन्होंने प्रालब्ध कैसे पाई, अभी तुम देख रहे हो। बाबा कहते हैं मैं कल्प–2 कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। अनेक ऐसे कल्प के संगमयुग बीते हैं। बीतते चलेंगे। उनका कोई अंत नहीं होता है। बुद्धि भी कहती है पतित–पावन बाप ज़रूर आवेगा ही संगम पर, जबकि पतित राज्य का विनाश कराय और पावन दुनिया की स्थापना करनी है। इस संगमयुग की ही महिमा है। सतयुग–त्रेता के संगम पर कुछ होता नहीं है। वो तो सिर्फ राजाई की ट्रान्सफर होती है। ल०ना० का राज्य बदल कर राम–सीता का राज्य होता है। बस। यहाँ तो कितना हंगामा होता है। बाप कहते हैं यह सारी पतित दुनिया (खतम होने) वाली है। सबको

जाना है। बाबा कहते हैं, मैं सबका गाइड बनता हूँ। दुख से लिबरेट कर सदैव के लिए सुख–शांति (में) जाना है। तुम जानते हो, हम सुखधाम में जावेंगे। बाकी सब शांतिधाम में जावेंगे। इस समय मनुष्य कहते भी हैं मन को शान्ति कैसे मिले। ऐसे कब नहीं कहेंगे सुख कैसे मिले। शान्ति के लिए ही कहते हैं; क्योंकि सन्यासियों को मिलती ही शांति है। इतने हठयोग आदि सब शान्ति के लिए ही करते हैं। सब शान्ति में ही जाने वाले हैं। फिर अपने–2 धर्म में आने वाले हैं। धर्म की वृद्धि होनी ही है। सभी स्वर्ग में तो आ नहीं सकते। इम्पॉसिबुल है। तुम बच्चों को सारे ड्रामा की नॉलेज है। आधा कल्प है सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी। फिर और धर्म आते हैं। अभी आदि सनातन देवी–देवता धर्म का कोई है नहीं। धर्म ही बिल्कुल प्रायः लोप हो जाता है। फिर स्थापना होती है। सैपलिंग लग रही है। बाबा यह सैपलिंग लगाते हैं। वो फिर झाड़ों आदि का सैपलिंग लगाते रहते हैं। यह सैपलिंग कैसा वण्डरफुल है। एक भी अपन को देवी–देवता धर्म का नहीं कहेंगे। बाप समझाते हैं जब ऐसी हालत होती है तब मैं आता हूँ। कौन स्थापन करते हैं, उनका नाम भी प्रायः लोप हो जाता है। नाम ही बदल ....। अभी तुम समझते हो शास्त्रों में क्या लगा हुआ है! बाप क्या समझाते हैं! बाप कहते हैं यह गीता–भागवत आदि जो भी शास्त्र हैं इनमें कोई सार नहीं है। इनसे कुछ मिलने का नहीं है। यह शास्त्र आदि पढ़ते–2 तुम पूरे पतित, तमोप्रधान बन गए हो। अब मैं तुमको इन सबका राज़ समझाता हूँ। अब तुम जज करो कौन राइट है। रावण है ही रॉंग मत देने वाला। इसलिए रॉंग अनराइटियस कहा जाता है। बाप है ही राइटियस। सच्चा बाबा सच ही समझावेंगे। सच खण्ड के लिए सच्चा ज्ञान बताते हैं। बाकी यह शास्त्र सब हैं भक्तिमार्ग के। कितने मनुष्य पढ़ते हैं। लाखों गीता–पाठशालाएँ अथवा वेद–पाठशालाएँ होंगी। एम–ऑब्जेक्ट कुछ भी नहीं। जन्म–जन्मांतर से पढ़ते ही आते हैं, आखरीन कोई तो एम–ऑब्जेक्ट होनी चाहिए ना! पाठशाला की एम–ऑब्जेक्ट चाहिए। शरीर निर्वाह अर्थ पढ़ते हैं, एम–ऑब्जेक्ट होती है। वो जो कुछ पढ़ते हैं, सुनाते हैं, उनका शरीर निर्वाह चलता है। बस। बाकी ऐसे नहीं कि मुक्ति–जीवनमुक्ति कोई पा सकते हैं वा भगवान को पा लेते। नहीं। मनुष्य भक्ति करते हैं भगवान को पाने लिए। भक्तिमार्ग में सा० भी होते हैं। सा० होता है तो समझते हैं बस, भगवान को पा लिया। इसमें खुश हो जाते हैं। भगवान को तो जानते नहीं। समझते हैं, हनुमान में, गणेश में, सबमें भगवान है। सर्वव्यापी का बुद्धि में पूरा बैठा हुआ है। बाबा ने समझाया है जो जिस भावना से जिसकी भक्ति करते हैं वह भावना पूरी करने लिए मैं सा० करा देता हूँ। वो समझते, बस हमको भगवान मिल गया, खुश हो जाते हैं। भक्त माल है ही अलग और ज्ञान माल अलग है। उनको रुद्रमाला कहा जाता है और वह भक्त माल। जिसने जास्ती ज्ञान पाया उन्हों की माला है और वो जास्ती भक्ति करने वालों की माला। भक्ति के ही संस्कार ले जाते हैं तो फिर भक्ति में चले जाते। वो संस्कार एक जन्म साथ चलते। ऐसे नहीं, दूसरे जन्म में भी होंगे। नहीं। तुम्हारे तो यह संस्कार अविनाशी बन जाते हैं। इस समय जो वर्सा पावेंगे, फिर संस्कार अनुसार जाए राजा–रानी बनते हैं। राजा–रानी बनते हैं फिर धीरे–2 कला कमती होती जाती है। अभी तुम बीच में हो। बुद्धि वहाँ लटकी हुई है। बैठे भल हम यहाँ हैं; परन्तु बुद्धियोग वहाँ है। आत्मा को ज्ञान है अभी हम जा रहे हैं। बाबा को ही याद करते हैं। हमारी आत्मा पार हो रही है। शरीर को तो इस किनारे छोड़ देंगे। इस किनारे यह पुराना शरीर और उस किनारे है हसीन शरीर। यह हसीन का रथ है। हुसैन नहीं, हसीन। जिसको बाबा आकर अकालमूर्त कहते हैं उनका यह तख्त है। (आत्मा) तो अकाल है। आत्मा को गोल्डन, सिलवर, कॉपर.... स्टेजिस में आ(ना) है। बाबा तो है ऊँच ते ऊँच। (वो) स्टेजिस में नहीं आता। आत्माएँ स्टेज़िस में आते हैं। गोल्डन स्टेज वाले को फिर सिलवर स्टेज में आना पड़े। अभी तुमको आयरन एज से गोल्डन एज में ले जाते हैं। अपना परिचय देते रहते हैं। उनको कहते भी हैं हेविनली गॉड फादर। उनका अलौकिक दिव्य जन्म है। खुद बतलाते हैं मैं कैसे प्रवेश करता हूँ। इसको जन्म नहीं कहेंगे। जब समय (पूरा होता) है तो भगवान को संकल्प उठता है रचना रचने। ड्रामा में उनका भी पार्ट है ना। प०पि०प० भी,

ड्रामा भी ड्रामा (अधीन) है। कहते हैं, मेरा पार्ट है भक्ति का फल देना। प०पि०प० को सुख देने वाला ही कहा जाता है। भक्ति में भी सुख देते हैं तो ज्ञान में भी सुख देते हैं। भक्तिमार्ग में है अल्प काल का सुख। जो ऐसा अच्छा कर्तव्य करते हैं तो अल्प काल लिए उसका रिटर्न में मिलता है। तुम तो सबसे अच्छा कर्तव्य करते हो। सब(को) बाप का परिचय देते हो। अभी देखो, रखड़ी का त्योहार आता है। तो इस पर भी समझाना पड़े। रखड़ी है ही पतित को पावन बनने की प्रतिज्ञा के लिए। अपवित्र को पवित्र बनाने का है रक्षा बंधन। तुमको पहले–2 परिचय देना है पतित–पावन बाप का। जब तक वो ना आए तब तक मनुष्य पावन बन ना सके। बाप ही आए पवित्र बनने की प्रतिज्ञा कराते हैं। ज़रूर कब हुआ है जो रसम–रिवाज़ चले आए हैं। अब प्रैक्टिकल में देखो हम बी०के०कुमारियाँ रखड़ी बाँध पवित्र रहते हैं। जनेऊ–कंगन आदि यह सब पवित्रता की निशानी है। पतित–पावन बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। अब मेरे साथ प्रतिज्ञा करो कि हम पवित्र रहेंगे। बाकी कोई कंगन आदि पहनना ना है। बाप कहते हैं प्रतिज्ञा करो। मुझे 5 विकार दान करो। यह रखड़ी बंधन 5000 वर्ष पहले हुआ था। पतित–पावन बाप आया था, आकर रखड़ी बाँधी थी पवित्र बनो; क्योंकि पवित्र दुनिया की स्थापना हुई थी। अब तो (नर्क) है। हम फिर से आए हैं। अब श्रीमत पर प्रतिज्ञा करो और बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। अभी पतित मत बनो। तुम भी कहो, हम ब्राह्मण आए हैं यह प्रतिज्ञा कराने। (हमारी) प्रतिज्ञा की हुई है। तुम्हारे पास बहुतों के खून से लिखे हुए पत्र भी रखे हैं– बाबा, हम प्रतिज्ञा करते हैं, कब पतित ना बनेंगे; परन्तु ऐसे भी बहुत लिखकर फिर खतम हो गए। पतित–पावन बाप आते ही हैं संगम पर। ब्रह्मा द्वारा आकर डायरैक्शन देते हैं बच्चों को कि पवित्र बनो। यहाँ सबने प्रतिज्ञा की है, तुम भी करो तो पावन दुनिया का मालिक बनोगे। बाकी बी०के०कुमारियाँ को राखी बाँधने की दरकार नहीं है। भाई और बहन दूसरों को बाँधते हैं कि पावन बनने की प्रतिज्ञा करो, तब ही बाप से वर्सा मिलता है बेहद का। तुम पवित्र ब्राह्मण बनो तो फिर देवता बन जावेंगे। हम ब्राह्मणों की प्रतिज्ञा की हुई है। एलबम्ब भी दिखाना चाहिए। यह रखड़ी बंधन की रसम कब शुरू हुई थी? अभी संगम पर यह पवित्रता की प्रतिज्ञा की है जो फिर 21 जन्म तुम पवित्र रहते हो। अब बाप कहते हैं माम् एकम् याद करो। ऐसी–2 प्वाइंट्स निकाल पहले से भाषण बनाना चाहिए। यह रसम कब से शुरू हुई है। 5000 वर्ष की बात है। कृष्ण जन्माष्टमी भी 5000 वर्ष की बात है। बाकी कृष्ण के चरित्र कुछ है नहीं। वो तो छोटा बच्चा है। चरित्र तो एक बाप के हैं, जो चतुराई से बच्चों को कौड़ी से हीरे जैसा बनाते हैं। बलिहारी उस एक की है। और किसका बर्थ डे मनाना कोई काम का नहीं। बर्थ डे मनाना चाहिए एक प०पि०प० का, बस। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। कह देते, कण–2 में भी हैं। फिर नाम–रूप से न्यारा भी है। कितना फर्क है। तुमको समझाना पड़े। कृष्ण तो गीता का भगवान नहीं है। भगवान कहते हैं मैं कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। बाकी कृष्ण थोड़े ही रात को 12 बजे जन्म लेंगे। गायन एक का है, दो का नहीं। सच्ची–2 बात यह है। तो फिर कृष्ण की जयन्ती की दरकार ही नहीं। शिवबाबा ना आए तो कृष्ण का जन्म कैसे हो। महिमा एक की है। सबका सद्गति वो एक है। इसलिए एक को याद करो। इस समय सब दुर्गति में हैं। कब्रदाखिल हैं। ज्ञान सागर के बच्चों को रावण ने भस्म कर लिया है। मैं आए ज्ञान वर्षा बरसाता हूँ। सागर के बच्चे तो सब हैं ना। सबको रावण ने जलाकर खाक कर दिया है। फिर ज्ञान अमृत की वर्षा से जय–जयकार हो जाती है। भाषण करने वालों को बैठ लिखना चाहिए। दिन–प्रतिदिन तुम्हारी ज्ञान तलवार पर ज्ञान का जौहर चढ़ता जाता है। तलवारें भी बहुत किस्म–2 की होती हैं। ये हैं सारी ज्ञान की बातें। रात को जब सोते हो तो बाप को याद कर सोने से स्वप्न आदि अच्छे आवेंगे। फिर उठने से भी बाबा को याद करने की टेव पड़नी चाहिए। टाइम फिक्स होगा तो टेव पड़ जावेगी। फिर न चाहते भी आँख खुल जावेंगी। ज्ञानमार्ग में सा० की वैल्यु नहीं, ज्ञान की वैल्यु है। अच्छा, मीठे, सिकीलधे, फिर से (आए मिले हुए ज्ञान सितारो प्रति याद प्यार, गुडमॉर्निंग।) ॐ